भूमण्डलीकरण एवं डॉ. मनोहर लोहिया का आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता

प्रियम्वदा कुमारी

भूमंडलीकरण के प्रारंभिक रूपों में भारत का कपड़ा, इंडोनिशिया और पूर्वी अफ्रीका के मसाले, मलाया का टिन और सोना, जावा का बाटिक और गलीचे, जिंबाबे का सोना तथा चीन के रेशम, पोर्सलीन और चाय ने यूरोप में प्रवेश पाया। यूरोप के लोगों की अपने स्रोतों का ढूढ़ने की उत्सुकता ने यूरोप में अन्वेषण के युग का प्रारंभ किया। अतः पश्चिम के तत्वावधान में आधुनिक भूमंडलीकरण मुख्यतः अतीत में भारतीयों, अरबों और चीनियों द्वारा स्थापित ढाचे के कारण ही संभव हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन की स्थापना इस प्रक्रिया में सहयोग देने वाला एक अन्य कारक है। इससे बढ़कर निजी कंपनियों को अपने देश से बाहर बाजार मिलने और उपभोक्तावाद ने विश्व के विभिन्न भागों को भूमंडलीकरण के विस्तार की ओर प्रेरित किया। डॉ. लोहिया की आर्थिक साधना के अध्ययन के पूर्व यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि समाजवाद का सामाजिक समता से अत्यन्त घनिष्ठ संबंध है। समाजवाद मुख्य रूप से न तो सम्पत्ति का सिद्धान्त है और न राज्य का यह आर्थिक नीतियों से ऊपर एक जीवन–दर्शन है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समता एवं सम्पन्नता का सिद्धान्त है। कोई सच्चा समाजवादी केवल आर्थिक सुधारों से ही सन्तुष्ट नहीं होता, वह अपनी एक विशिष्ट शैक्षणिक, नैतिक एवं सौन्दर्यशास्त्रीय नीति का भी प्रतिपादन करता है।